अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मानिक मोर हेरइलें' के रचनाकार के ह ?
2. डॉ. विद्यानिवास मिश्र के मातृभाषा का रहे ?
3. 'मानिक मोर हेरइलें' कवना विधा के रचना ह ?

   (क) कहानी, (ख) नाटक,

   (ग) कविता, (घ) ललित निबंध
4. विद्यानिवास मिश्र अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कवना अधिवेशन के अध्यक्ष बनल रहीं ?

   (क) पहिला, (ख) दसवाँ,

   (ग) नउवाँ, (घ) ग्यारहवाँ
5. विद्यानिवास मिश्र के जन्म कवना जिला में भइल रहे ?

   (क) गाजीपुर, (ख) गोरखपुर,

   (ग) देवरिया, (घ) दिल्ली

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. विद्यानिवास मिश्र के भोजपुरी में कवन पुस्तक प्रकाशित बा ? एकर संपादक प्रकाशक के बा ?
2. लेखक केतना साल के उमिर में विद्यालय जाये लगले ?

3. इमली का डाढ़ि पर झूला खेलत में गिर गइला पर लइकन के कवन चिन्ता सतावत रहे ?
4. पाठ से चुन के बताई-
   (क) पाँच गो संज्ञा पद, आ (ख) पाँच गो विशेषण शब्द ।
5. बियाह का बाद चले के बेरा लेखक के आँख काहे भर गइल?
6. लेखक से अपना भाषा में कुछ लिखत काहे नइखे बन पावत?
7. बचपन के कवन बात मन से कबो ना छूटे ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भोजपुरी ललित निबंध के विकास में विद्यानिवास मिश्र के योगदान के वर्णन करीं ।
2. 'मानिक मोर हेरइलें' में लेखक का कहे के चाहता ?
3. पाठ से बीनल कुछ कथन दिहल जा रहल बा । एकरा मतलब के तनीं साफ-साफ बतलाई ।
   (क) मनई के जब चिन्हारी हेरा जाले तब घर रहलो पर घर ना रहे ।
   (ख) पिछवारे के सुधि कवनो नीमन काम नाहीं, आगा देखे के चाही, आगा देखेवाला के जमाना होला ।
   (ग) टटका कुछ रह ना पावे ।
   (घ) सब बात अन्हे कके जिनगी गुजारे में ही कुसल बा ।
   (ङ) आज के आदमी आगा बढ़े खातिर का कर रहल बा ? का अइसन कवनो राह होई जवन मनई बनाई आ सबके गुंजाइश राखी ?

4. अँखिगर लोगन का सोझा आपन दुखड़ा कहे में लेखक का अहक लागत बा, काहे?

5. "देखीले कि लोक केहू के होला नाहीं, जेतना लेला ओकर टुकड़ो नाहीं देली ।" एकर का मतलब बा ?

कार्य परियोजना

1. अपना गाँव के बारे में एगो निबंध लिखीं ।

अध्याय चौदह

रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

[रामनाथ पाठक 'प्रणयी' जी के जन्म 5 जून, 1921 के भोजपुर जिला के बनछुहाँ गाँव में भइल रहे । 'प्रणयी' जी एम.ए. (द्वय) पी-एच.डी., साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य आ आयुर्वेदाचार्य कइले रहीं । 'प्रणयी' जी कवि, लेखक आ पत्रकार के रूप में प्रसिद्ध रहीं । उहाँ के एच.डी. जैन कॉलेज, आरा में प्राध्यापक रहीं । 'कोइलिया', 'सितार', 'पुरइन के फूल', 'कचनार', 'वरदान', 'सोना अइसन भोर' आ 'आवत होइहें साँवरिया' नाम से उहाँ के सात गो भोजपुरी कविता-संग्रह प्रकाशित बा। 'प्रणयी' जी का गीतन में प्रकृति के बड़ा सुन्दर वर्णन भइल बा । उहाँ के निधन 16 अगस्त, 1987 के हो गइल ।]

शरद

शरद के लहँगा लहराइल ।
बाज उठल केकर दो पायल,
के दो मुसुकाइल ।
शरद के लहँगा लहराइल ।

बीत गइल बरखा के पहरा,
सिहरावन लागे भिनसहरा,
ताल-ताल में लाल उमिरिया-

खिल-खिल टइलाइल ।
शरद के लहँगा लहराइल ।

साफ भइल आकास सुहावन
खंजरीट उतरल मनभावन,
रात-रात भर पात-पात पर-
मोती छितराइल ।
शरद के लहँगा लहराइल ।

आँगन-आँगन में अगुआनी,
पूजा-दीप अरघ के पानी,
उड़ल चान के उड़न-खटोला
बलमा घर आइल ।
शरद के लहँगा लहराइल ।

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'शरद' कवना विधा के रचना ह ?
2. डॉ. रामनाथ पाठक 'प्रणयी' के जन्म कवना जिला में भइल रहे ?
3. शरद में कब के वर्णन बा ?

   (क) गर्मी, (ख) जाड़ा

   (ग) बरसात (घ) बसन्त
4. 'कचनार' केकर कविता संग्रह ह ?

   (क) रामनाथ पाठक प्रणयी (ख) महेन्द्र शास्त्री

   (ग) अनिरुद्ध (घ) सूर्यदेव पाठक पराग

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. शरद ऋतु में आकाश कइसन रहेला ?
2. शरद ऋतु कवना ऋतु के बाद आवेला ?
3. काव्य कला का दृष्टि से 'शरद' कविता के समीक्षा करीं ।
4. शरद ऋतु के प्रकृति के वर्णन करीं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'शरद' शीर्षक कविता के भावार्थ लिखीं ।

2. भोजपुरी कविता के विकास में रामनाथ पाठक प्रणयी के योगदान के वर्णन करीं ।

परियोजना कार्य

1. रउवा कवनो मौसम पसन परेला ? ओकरा बारे में लिखीं ।

अध्याय पन्द्रह

राजेन्द्रप्रसाद सिंह

[राजेन्द्रप्रसाद सिंह एगो नामी भाषा वैज्ञानिक बानी । इहाँ के जन्म सासाराम में भइल । इहाँ के भाषा के विकास में सत्ता, समाज, आर्थिक स्थिति के भूमिका के अंतर्संबंधन के खोज कइले बानी । डॉ. सिंह अबही अध्यापन से जुड़ल बानी । इहाँ के प्रकाशित किताब बाड़ी सन- भाषा का समाजशास्त्र, भारत में नाग परिवार की भाषाएँ, भोजपुरी के भाषाशास्त्र आ भोजपुरी व्याकरण, शब्दकोश आ अनुवाद के समस्या ।

भाषाविज्ञान जइसन नीरस विषय के इहाँ के सरस आ रोचक बना के परोसले बानी ।]

भोजपुरी प्रदेश में नीम, आम आ जामुन

प्रो. प्रजीलुस्की के हवाले से डॉ. भोलाशंकर व्यास बतवले बानी कि 'म्ब', 'बु' ध्वनिवाला संस्कृत शब्दन में से अधिकतर शब्द मुंडा भषन से एह भाषा में आइल बाड़े सन । निंब, अंब आ जंबु अइसने शब्द बाड़े सन । नीम के एगो नाम 'कीटक' ह आ 'कीटक' मगध के प्राचीन जनजाति के एगो नाम ह । मगध प्रदेश के प्राचीन वैदिक नाम 'कीकट' रहे आ संगही एह जमीन पर बसे वाली प्राचीन अनार्य जातियो के 'कीकट' कहल जात रहे । 'कीकट' आ 'कीटक' में वर्ण-विपर्यय बा । तब ई मानल जाये के चाही कि नीम के गाछ कीकट प्रदेश में बहुते होत रहे ।

हिंदी प्रदेश के एह पूरबी इलाकन में नीम के बगान रहे । अइसन कि कई गो गाँवन के नाम एह गाछ विशेष पर रखाइल बाड़े सन । नीमा, निमिया, निमियाडीह जइसन स्थानवाचक नामन के नमूना के तौर पर देखल जा सकता । निमाड़, नीमच आ

गंधीनीम जइसन क्षेत्र, शहर आ मुहल्लन के नाम फारसी से प्रभावित बाड़े सन । भोजपुरी अंचल के प्राय: गाँवन में पूरब के तरफ काली-स्थान होला । काली-पूजा के एह क्षेत्र में खास महत्त्व बा । काहे कि एकरा पूरब में बंगाल सदा से शक्ति-पूजा के केंद्र रहल बा । आजो बंगाल में काली के उपासना के प्रधानता बा । एही से एने के लोकगीतन में काली के बंगालियन के देवी कहल गइल बा-

कवने बरने तोरा घोड़वा ए सीतलि कवना बरने असवार ।
बँगालिनि देवी हो; लीहीं ना पूजवा हमार ।

'काली' शब्द आर्यभाषा के ना हवे । कारण ई बा कि काल (काला) द्रविड़ भाषा से आइल बा । द्रविड़ कुल के भषन में एकर कईगो प्रतिरूप मौजूद बाड़े सन; मिसाल खातिर तमिल काड़, कन्नड़ काड़ (कालापन), कड़गु (काला भइल) आदि । काली आग के सात गो जीभन में से एगो हईं । काली के स्वभाव उग्र ह, जइसे शीतला के शीतल । 'शीतला' आर्य भाषा के शब्द हवे, बाकिर उहाँ के सवारी 'गर्दभ' आर्य शब्द ना हवे, हालाँकि ई शब्द 'ऋग्वेद' तक में पावल जाला । संस्कृत के शब्द-निर्माण के प्रक्रिया में 'भ' के भूमिका नगण्य बा । शलभ, वृषभ, रासभ, गर्दभ जइसन तनी सा शब्दन में 'भ' प्रत्यय के व्यवहार होला, उहो मनुष्येतर प्राणियन के नाँवन के संगे । पूरबी इलाका में जब

केहू के शीतला के बेमारी होला त ओकर कवनो दवा ना कइल जाला । रोगी के झाड़-फूँक करे खातिर मालिन आवेली आ नीम के डारी से रोगी के झारेली । एह नीम के डारी पर शीतला माई झूलेली । इहाँ के रहे के स्थान नीम के गाछ ह-

निमिया के डाढ़ि मइया, लावेली हिंडोलवा कि झूली-झूमी मइया मोरी गावेली गीत कि झूली-झूमी ।

नीम के डारी से शीतला के मरीज वोइसही नीमन हो जाले जइसे अछवानी से लइका भइल औरत अच्छा हो जाली । नीम के गाछ के पूजा आजो एजवा के जनजातियन में प्रचलित बा । एकर पतई के प्रयोग दुष्ट प्रेतन के भगावे खातिर एह क्षेत्र में खूब कइल जाला ।

भाषा-वैज्ञानिकन के फैसला बा कि यूरोपीय भषन में आम खातिर कवनो शब्द ना रहे । पुर्तगाल के लोग मलय देश में गइल आ एह फल के यूरोप में ले आइल । एह फल के संगे-संगे ऊ लोग आम के मलय नाम Mangga (मंगा) भी ले आइल । Mangga के कई गो रूप यूरोपीय भषन में प्रचलित भइल, जइसे अंग्रेजी में मैंगो (Mango), पुर्तगाली में मंगा (Manga) आदि । तमिल में कच्चा आम के 'माङ्गाय' कहल जाला बाकिर आम के 'माम्पळम्' । द्रविड़ क्षेत्र में आम आ मंगा दूनो एक संगे मौजूद बाड़े सन । एगो आस्ट्रो-एशियाटिक के आ दूसर आस्ट्रोनेशियन

के । आम के बारी हर हालत में आस्ट्रिकन के देन ह ।

पाणिनि आम्रवण के रूप में आम्र के प्राचीनतम उल्लेख कइले बानी । वेदन में ई शब्द नइखे । आम के गुजराती में 'आँबो' कहल जाला आ सिंधी में 'अंबु' । पंजाबी आ सिंहली में एकर रूप 'अंब' ह आउर बंगला आ उड़िया में 'आँब' । मराठी में एकरा के 'आँबा' कहल जाला आ हिंदी के लोक-बोलियन में आम के टिकोरा के 'अंबिया' कहल जाला । तब अइसन लागता कि मध्य भारतीय आर्यभाषा के 'अंब' प्राचीनतम शब्द बा । संस्कृत के आम्र वर्ण-संकोच के नमूना ह । यदि शब्दन के अंत में 'म्ब' वाला ध्वनि-सूत्र के याद करीं त 'अंब' मुंडा परिवार के शब्द ह ।

पूरबी इलाकन में कईगो गाँवन के नाम एह शब्द के लेके बा । अमरा, अमरी, अमरथा, अमझोर, अमलोरी, अमवलिया, अमाडाढ़ी, अमावाँ, अमियावर, अमिया, अमियावँ, अमुआँ, अमैठी, अमौना- अइसन न जाने केतना नाम बाड़े सन । अमराई पूरबी बोली के शब्द ह, जवना के अर्थ बा 'आमन के बगइचा' । जइसे केरल में नारियल के बारी होला, वोइसही पूरबी इलाकन में आम के बारी होला । केरल में आम के बारी खातिर कवनो खास शब्द नइखे, जबकि नरियर के बगइचा 'तेंङिन तोप्पु' कहाला । हिंदी प्रदेश के पूरबी इलाका में नरियर के बगइचा खातिर कवनो खास

शब्द नइखे, जबकि आम के बगइचा 'अमराई' कहाला । भोजपुरी क्षेत्र में आम के बड़-बड़ बगइचा के 'लखराँव' भी कहल जाला, जवना में करीब-करीब एक लाख गाछ होत रहे । एह प्रदेश में लखराँव नाम से भी कई गो गाँव बाड़े सन । एही तर्ज पर ससराँव (सहसराम/सासाराम) बा जवना के गलती से सहस्त्रबाहु के नाँव से जोड़ल जाला । पालि साहित्य में हजार-हजार गाछ वाला आम के बनन के उल्लेख बा । अइसन घन आ अँधेरिया बागन के 'सहस्संब' वन कहल जात रहे ।

भोजपुरी प्रदेश में एह आम से बनल कई गो खाद्य पदार्थ बाड़े सन- अमचूर, अमझोरा, अमावट । आम के छोट-छोट गाछनो खातिर शब्द बा- अमोला । दाग लागल आमो खातिर शब्द बा- कोलासी । आम के फल के मुँह कावर से निकलल रसो खातिर शब्द बा- चोप । आम के फूल के भोजपुरी में 'मोजर' कहल जाला आ एकरा छोट-छोट फर के 'टिकोरा' । आम के लेके एने कईगो गीत प्रचलित बाड़े सन । लोकगीत के नायिका एगो ना बल्कि पूरा सय गो आम के गाछ लगावतारी-

एक सव अमवा लगवलीं, सवा सव जामुन हो ।
अहो रामा, तबहूँ न बगिया सोहावन एक रे कोइलिया बिनु ॥

मैथिल कवि विद्यापति दूल्हा के गम्हार के पीढ़ा देतानी, जबकि भोजपुरी क्षेत्र के दूल्हा के आम के पीढ़ा दिहल जाला ।

आम के पीढ़ा शुभ मानल जाला । आम के 'पल्लो' (पल्लव) पवित्र हवे । जब आम्र-वृक्ष के आर्यीकरण भइल तब एकर पतई पवित्र भइल ।

नायिका आम के गाछ सय गो लगावतारी आ जामुन के सवा सव । अइसन काहे ? जामुन के गाछ जरूर ज्यादा रहे एह इलाका में । 'जमुआर' कहल जात रहे- जामुन के घन जंगल के । जमुआर/जमुहार नाँव के कई गाँव एने बसल बाड़ेसन । आजो जंबु गाछ खातिर ई इलाका अनुकूल बा । 'जमवट' एह इलाका में बहुप्रचलित शब्द बा, जवन एने के जनता के बीच धड़ल्ला से चलेला । 'जमवट' कहल जाला जामुन के लकड़ी के गोलाकार खंड के, जवन इनार में सबसे नीचे दिहल जाला जहवाँ से ईंटा के जोड़ाई शुरू होला । पानी के अंदर 'जमवट' सड़ेला ना, जइसन कि आउर लकड़ी सड़ जाली सन । अइसन में एह क्षेत्र के जनता 'जमवट' के प्रयोग अइसन कई मौका पर करेली जहवाँ पानी आ काठ के अनवरत संपर्क होखे ।

पालि ग्रंथन में जंबुद्वीप के चरचा बार-बार आइल बा, जवन प्रायः मगध, उत्तर बिहार आ पूरबी उत्तरप्रदेश के तस्वीर प्रस्तुत करेला । जंबुखादक-संयुक्त में जंबुखादक नाँव के परिव्राजक के वर्णन बा । संभवतः ई परिव्राजक जामुन खाइल करत रहले । जातकन में एगो जंबुखादक जातको बा । जंबुध्वज नाँव के एगो

पालि व्याकरणाचार्य भी भइल रहले जे 1651 ई. में 'संवण्णनानयदीपनी' के रचना कइले रहीं । 'महावंस' में जिक्र आइल बा कि श्रीलंका के राजा अपना भगिना महारिष्ठ प्रधानमंत्री, पुरोहित, मंत्री आ गणक- एह चारो आदमियन के दूत बना के बहुमूल्य रत्नादि देके सेना सहित पाटलिपुत्र भेजले रहीं । एह दूतन के रास्ता के वर्णन भी बा, ''जंबुकोल से नाव चढ़के सात दिनन में ऊ लोग बंदरगाह पहुँचल । ओजवा से फेर एक सप्ताह में पाटलिपुत्र में पहुँचल ।'' जंबुकोल का ह ? मगही आ भोजपुरी में कोली शब्द के व्यवहार दू मकानन के बीच के गली के अर्थ में होला । जंबुकोल ऊ रास्ता ह जहवाँ से पूरबी इलाका यानी जंबुद्वीप जाइल जात रहे । एजवा कोल के संस्कृत 'कलह' (पथ) आ कन्नड़ 'कलि' आउर ब्राहूई 'कार' से जोड़ के देखल रोचक होई । कलि आ कार 'जाना' से संबंधित शब्द बाड़ेसन ।

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नीम के एगो आउर नाँव का हवे ?
2. अमावट कवन चीज से बनेला ?
3. भोजपुरी क्षेत्र में दुल्हा के कवना पीढ़ा दिहल जाला ?
4. जंबुध्वज के रहस ?

   (क) राजा (ख) मंत्री

   (ग) व्याकरणाचार्य (घ) एह में कवनो ना
5. भोजपुरी अंचल में प्राय: केने काली स्थान होला ?

   (क) पूरब (ख) पश्चिम

   (ग) उत्तर (घ) दक्खिन

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. राजेन्द्रप्रसाद सिंह कहाँ के रहनियार हईं ?
2. काली शब्द कवना भाषा से आइल बा ?
3. यूरोप में आम के नाँव कइसे आ का-का प्रचारित भइल ?

4. जमवट कवना गाछ के लकड़ी के बनेला आ काहे ओही गाछ के लकड़ी के बनेला ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पाठ का आधार पर नीम, आम आ जामुन के नाम परिवर्तन आ उपयोगिता बताईं ।
2. पठित निबंध के सारांश अपना भाषा में लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. आम के प्रकार पता लगाई आ ओकरा स्वाद, विशेषता के बारे में लिखीं ।

अध्याय सोलह

डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

[डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव के जन्म भोजपुर जिला में 20 मार्च 1936 में भइल रहे । उहाँ का पटना विश्वविद्यालय में आचार्य रहीं । साहित्य सेवा खातिर उहाँ के पद्मश्री के सम्मान मिलल । उहाँ के भोजपुरी-हिंदी में लेखन कइलीं । उहाँ के प्रकाशित किताबन के नाँव हवे- लिफाफा देखकर, निराला जीवन आ साहित्य, अद्भूत रस आ भारतीय काव्यशास्त्र, बहुत दिन के बाद, शब्द पके मन आँच में, जयप्रकाश नारायण । शैलेन्द्र जी सांसद भी चुनल गइल रहीं । उहाँ के प्रस्तुत कहानी में भूमंडलीकरण के प्रभाव से दरकत पारंपरिक मूल्यन के चित्रण भइल बा ।]

केकरा खातिर छठ ?

प्रबोधजी आठ साल से बाहरे बाड़न । छपरा से बी.एस. सी. पास करके दिल्ली गइलन, उहँई से एम.एस-सी. कइलन, एम.बी.ए. कइलन आ उहँई एगो बड़का कंपनी में नौकरी हो गइल । उहँई बिआहो हो गइल, बिहारे के एगो कलक्टर साहब के पी.ए. के बेटी से । शानदार बिआह भइल, खूब ताम-झाम से । लइकी जस नाम तस गुन-निर्मला । गोर, लमछर, एम.ए. पास, गावे में एक नंबर आ घर के कामकाज में एकदम फिट । नोकरी मिलत रहे, बाकी साफ इंकार कर दिहलस । ओकर कहनाम रहे कि जवन मेहरारू दिन भर नोकरी करेली, ओकर बाल-बच्चा बरबाद हो जाला, घर, घर ना रह जाय । घर में रहेवाला दाई-नोकर त अब मिले ना, बड़-बुजुर्ग केहू साथे रहे ना, त के देखी लइकन के ? पहिले वाला जमाना त बा ना कि आठगो-दसगो

बाल-बच्चा में एकाध गो बिगड़ियो जाव, त कवनो खास फरक ना पड़त रहे । अब त एक, ना त हद् से हद दू, बस ! कवनो बिगड़ गइल, त घर-खानदान सब सोगहग साफ ।

सखी-सहेली, अड़ोसिन-पड़ोसिन बहुत समझवली कि दिल्ली में एक बेकत के कमाई से घर ना चली, आज ना बिहान, नोकरी खोजहीं के पड़ी, बाकी निर्मला ना मनली. त ना मनली । अब तक बिआह के सात बरिस हो गइल । लइका एक्के गो भइल-एक बरिस के भीतरे । पाँच साल इंतजार करके ऑपरेशन करा लेली । उनका जिनगी के अकाश में सूरज जस चमके, उनकर अकेला दुलरूआ । नामो रखली -'रवि प्रकाश ।'

प्रबोधजी त आठे बजे घरे से निकल जालन, लौटत-लौटत रात में कहियो साढ़े आठ, कहियो नौ । एतवारो के दिन चार-पाँच घंटा जाहीं पड़ेला । ई मल्टीनेशनल कंपनियन के त इहे हाल बा । पइसा त देवेलीसन् हुमच के, बाकी काम में बखलोइया छोड़ा देवेलीसन् । ना टिफिन, ना लंच, उहँई आफिसे में टेबुले पर पैकेट पहुँचा दी, एक बजे के बाद । खाए के अलगा से कौनो टाइम नइखे । खातो रहीं, आ कामो करत रहीं । मुँह में कौर बा त का फोन आ जाई, त बतियावहीं के पड़ी, कबही फैक्स आ जाई, कबही ई-मेल आ जाई, कबही देश से, कभी विदेस से । खाए

के बेरा अरबस के कुछ ना कुछ अइबे करी । भोजन के ना कवनो टाइम बा, ना कवनो महत्त्व बा । कइसहूँ मुँह में कुछ ठूँस लेवे के बा । एक्के डिब्बा में दही, चटनी, सब्जी सब घोर-मट्ठा । कुछ देर के बाद भुला जाला कि का खइलीं, का पिअनीं । रात में भी अगर नौ बजे के बाद अफसर रोक लिहलस, त फेर ओइसहीं डब्बा आ जाई । दिनभर जे बाहर पेराई, ऊ लड़िका के कब पढ़ाई, का लिखाई । ऑफिस से चूर होके लौटला के बाद होश रहेला ? केन्ने मेहरारू, केन्ने बेटा ?

रवि के बस त छौ बजे भोरहीं आ जाला, आ डेढ़ बजे दिन में पहुँचा देवेला । रात में त शायदे कभी ऊ प्रबोधजी के आवे तक जागल रहेला । बाप-बेटा के खेलत-बतियावत शायदे केहू देखले होई । ओकर पढ़ाई-लिखाई, खेलकूद, बर-बेमारी, सब जिम्मेवारी बस मतारी पर ।

धन्न बाड़ी निर्मला । एहघ ड़ी अइसन मेहरारू खोजला-ढुँढ़ला से ना मिली, जे बेटा खातिर आपन सौक-सिंगार, सैर-सपाटा, क्लब-सिनेमा, पार्टी-सार्टी छोड़-छाड़ के ओकरे नींने जागे, ओकरे नींने सूते । जगलो में बेटा, सपनो में बेटा । जइसे कवनो मूर्तिकार छेनी-हथौड़ी-नहरनी से एगो पत्थर के कई-कई बरस ले पीट-पाट के, छेद-छाद के, सहेज-सँवार के, एगो देवमूर्ति तराशेला, ओइसहीं

ऊ रोज बेटा के तराशेली ।

भोरहरी उठला से लेके रात के ग्यारह बजे ले, बस रवि, रवि, रवि । रवि के टिफिन, रवि के जूता पालिस, रवि के टाई, रवि के बैग, लौटला पर रवि के खाना, सूतना, खेल, जलपान, खाना, अलमारी, एक-एक चीज के चिंता । आपन सब अरमान ऊ एगो बेटा से पूरा कर लेवे के चाहत रही । एक दिन स्कूल में नागा ना होखे के चाहीं, एक दिन होमवर्क ना गड़बड़ाए के चाहीं । हर समय इम्तहान के बात, नंबर के बात, फस्ट आवे के बात ।

निर्मला ई सब एह से करत रही, काहे कि उनकर हार्दिक इच्छा रहे कि बेटा आई.ए.एस. अफसर हो जाय, कलक्टर हो जाय । उनकर बाबूजी कलक्टर के पी.ए. होके रिटायर कइले रहन । उनका से ऊ रोज साहेब के, मेमसाहेब के किस्सा-कहानी सुनले रही । तबे से उनका दिमाग में घुस गइल कि कलक्टरी कवनो नोकरी ना ह, बादशाहत ह । पूरा जिला में ओकरा मर्जी के बिना पतई ना हिले । करोड़न के मिल्कियत । जेकरा जे कह दी, ओकरा ऊ करहीं पड़ी । गाड़ी-सवारी, चर-चपरासी अफरात । रोज फूल-माला, मिठाई, डिनर । कवनो विभाग के कोई अफसर होखे कलक्टर के सामने सभे छोट हो जाला । जहाँ चाही सड़क

बनवा दी, जहाँ चाही स्कूल खोलवा दी, जे मन में आई, से करी । बड़का बंगला, बगान, खानसामा । एकरा से जादे सुख कहाँ होई, कवना नोकरी में होई ? तीन साल जे कलक्टर रह जाई, ओकर तीन पुश्त तर जाई । बाबूजी त कलक्टर के पी.ए. होके एतना शान से रहनीं, सब बेटियन के बढ़िया शादी कइनीं, कवनो बिआह में नौ लाख से कम ना खर्चा भइल । एगो बेटी के बिआह करे में आउर लोग के कचूमर निकल जाला, उहाँ के पाँच-पाँच बेटी के शान से विदा कइनीं । नाता-रिश्ता में कोई उनकर मुकाबला करेवाला ना भइल । बाबूजी मरे के बेरा इहे आशीर्वाद दे गइनीं -'नीरू, बेटा के कलक्टर जरूर बनइह । हम परलोक से सब सुख देख के प्रसन्न होखब । आत्मा जुरा जाई । हमार नाती जरूर कलक्टर बनी ।'

बाबूजी के आशीर्वाद आ आपन हुलास, दूनों के सहारे ऊ बेटा के गढ़े में रात-दिन लागल बाड़ी । भगवान जरूर उनकर सुनिहन । अबले त लच्छन अच्छे बा । मतारी के मन लायक बन रहल बा बेटा । "हैपी स्कूल" में नाम लिखाइल मामूली बात बा ? टेस्ट भइल, माई-बाप के इंटरव्यू भइल, शुरू में सत्तर हजार रुपया जमा करे के पड़ल आ महीना में सब मिला के बतीस सौ रुपया लाग जाला । ऊपर से ट्यूशन, कपड़ा-लत्ता, जूता-मोजा,

आइसक्रीम, बगैरह । धरलीं पचास हजार रुपया साल ।

स्कूल बा कि देखनिहार के धरनिहार लागी । एयर कंडीशन बिल्डिंग, एकदम झकाझक । टीचरन के देख के लागेला कि आजे लंदन से आइल बाड़ी सन । एक्को शब्द कवनो दोसर बोली के केहू ना बोले । बस फाटाफट अंग्रेजी । अइसे त निर्मलो एम.ए. पास बाड़ी, बाकी ओकनी के अंग्रेजी सुन के त लागेला कि ऊ महामूरख बाड़ी । कहाँ मोतिहारी के कन्या विद्यालय के अंग्रेजी, कहाँ कान्वेंट के अंग्रेजी । मोतिहारी वाली टीचर लदर फादर । ना सिस्टर, ना मदर । एकदम से माईजी-मोटकरी । ईहाँ त तरह-तरह के खेल, रंग-बिरंग के खेलौना, कंप्यूटर, इंटरनेट, का नइखे उहाँ । एक-एक लड़िका के रिपोर्ट कार्ड में ओकर पूरा हुलिया लिखल रहेला । "हैपी स्कूल" के टीचर, स्मार्ट, चुहचुह, चले में खटाखट, बोले में फटाफट । हँसे, मुस्काय, हल्लो, हाय के तौर-तरीका । एह वातावरण में त लड़िका साहेब बनबे करी । आऊर-चीजन में भले दू पइसा कटौती हो जाव, बाकिर लइकन के जरूर अंग्रेजी स्कूल में, ठाट-बाट के वातावरण में रख के पढ़ावे के चाहीं, ना त माई-बाप के गलती से, कंजूसी से, लड़िका बकलोल निकल जाई, त सब चउपट । खानदान त लड़िके से जानल जाला ।

एह स्कूल में कवनो लड़िका महीना में तीन दिन से जादे अगर गैरहाजिर हो जाई, त ओकरा माई-बाप के बोला के कारण पूछल जाला, बीमारी होखी त डॉक्टरी सर्टिफिकेट देवे के पड़ी । हर महीना में क्लास में इम्तहान होला, कवनो इम्तहान छूट जाई, त गार्जियन के बोला के "धोलइया" होई । हाफ इयरली छूट जाई, त सालाना में बइठहीं ना दी । चारों ओर से चाँक चढ़ा के सोझ कइले रहेली सन । अइसन स्कूल में बड़ा भाग से, चाहे बड़की पैरबिए से कोई के घुसे के मोका मिलेला । प्रबोधजी भी मनेमन खुश रहेलन कि उनकर बेटा आगे बढ़ रहल बा, आ उनका कवनो झंझट-खटखट नइखे । सब निर्मला सँभारेली ।

बाकी एक दिन इहे स्कूल लेके बड़का झंझट हो गइल । घरे से माई के फोन आ गइल कि "अबकी छठ में तू लोग पूरा परिवार आव । अबकी हम छठ बइठा देब । अब पार नइखे लागत । पोता के मनता रहे, सात छठ के । अब पूरा हो गइल । एह छठ में बबुआ के आवल जरूरी बा ।" प्रबोधजी हुँ-हाँ क के सुन लेहलन, आ कहलन कि "ठीक बा, हम काल्ह फोन क के बताइब, कि का कइसे प्रोग्राम बनी ।" सोचे लगलन कि छठ में आवे-जावे के मतलब बा कम-से-कम आठ दिन के छुट्टी आवाजाही, पबनी-परब, भेंट-मुलाकात सब मिला के । आपन

छुट्टी के त जोगाड़ अपनहीं करे के पड़ी, बाकिर रवि के स्कूल के छुट्टी खातिर त निर्मला से कहे पड़ी । स्कूल के काम त ऊहे करेली । जे घरी फोन आइल, निर्मला आपन कवनो सहेली के घरे गइल रही, अब त राते में बात होई ।

ऑफिस से प्रबोधजी ओ दिन साते बजे लौट अइलन । आके, नहा-धोके, खा-पी के, अब बिछौना पर गइलन त तनी-मनी हँसी-मजाक के बाद निर्मला के देह पर हाथ धके खूब पोल्हा के बतवलन "भोरे माई के फोन आइल रहे, छठ में सबके बोलवले बाड़ी, बबुआ के मानता के छठ बा, एह साल बइठावे के बा, एह से ओकरा लेके चले के बा, जइसे तू कहबू ओइसहीं प्रोग्राम बनीं ।" एन्ने बात पूरा भइल, ओन्ने एकदम झनाक से प्रबोधजी के हाथ टेर के निर्मला गरजे लगली "बबुआ कइसे जाई, आठ दिन स्कूल छोड़ के । ओकरो त नामे कट जाई । एतना दिन से हम दिन-रात ओकर जोग-जतन में एही खातिर लागल बानी कि ओकर नामे कट जाय । रउआ जाए के बा, त जाईं, हम त ना बेटा के छोड़ के जाइब, ना बेटा के लेके जाइब । छठ त हर साल आई-जाई, छठ के नाम पर हम बेटा के जिन्दगी खराब कर दीं ?" प्रबोधजी बोरसी पर छींटा मारे के कोशिश कइलन -"ना-ना, हमार ई मतलब ना रहे । होई त ऊहे जे तूँ कहबू,

बाकिर माई, के कइसे समझावल जाय । छठ के नाम पर कुछ उल्टा-सीधा कहे में भी त डर लागेला । तू कवनो बाहर के त बाड़ू ना, तोहरा त ठीक से मालूम बा कि बिहार में छठ के नाम पर.....।''

निर्मला फुफकारे लगली -''हमरा सब मालूम बा । छठी मइया थोड़े कहिहें कि उनका नाम पर कवनो लड़िका के जिन्दगी बरबाद हो जाय । पूजा-पाठ, दान-पुन्न आदमी बाले-बच्चा खातिर नू करेला ? लइका के मुरूख बना के, पूजा कइला से कवनो देवी-देवता प्रसन्न ना होइहें । हम ना माई के पूजा से रोकतानी, ना रउआ के जाए से, बाकिर हम अपना बेटा के भविष्य पानी में डुबावे खातिर तइयार नइखीं । कान खोल के सुन लीं । आठ दिन ऊ कवनो हालत से बाहर ना जा सके, ''हैपी स्कूल' बा, उहाँ कवनो लटर-पटर ना चली ।'' प्रबोधजी -''त एकर मतलब कि कुच्छो हो जाई, त ऊ ना जा सके । मान ल कि माई के मृत्यु हो जाय, त ऊ श्राद्धो में ना जाई, ओमे त तेरह दिन के लफड़ा लागेला ।'' निर्मला -''ठीक कहतानी कि ऊ ना जा सके । अइसे आजकल दिल्ली में त घरे-घरे तीने दिन में श्राद्ध हो जाला । तेरह दिन वाला श्राद्ध खातिर त राउरो कंपनी मुश्किले से छुट्टी दी । देखीं, समय के हिसाब से सब कुछ बदलेला, सबके

बदले पड़ेला । लकीर के फकीर बनला से एह जमाना में काम ना चली । अरे, ई सब रीति-रिवाज तब बनल रहे, जब सभे एक्के जगह, एक्के साथ रहत रहे । अब बाप कहीं, मतारी कहीं, बेटा कहीं, बेटी कहीं, भाई कहीं, भौजाई कहीं । सब के काम-धाम, सबके दूरी, सबके मजबूरी । रउआ खुद समझे के चाहीं, आ माई के समझावे के चाहीं ।''

-''एही से आउर जरूरी बा कि साल में एकाधो बार त परिवार के लोग घरे जुटो, एक दूसरा के चीन्हों, पहचानो । ना त कवनो सम्बन्धे ना रह जाई । छठ में त हमनी....।''

-''सुनीं । दिल्ली में बिहारी लोग के छोड़ के आउर लोग त छठ ना करे । त ओकनी के नाता-रिश्ता, घर-परिवार कइसे चलेला ? केहू छठ ना करी त का होई ? बिदेश के त बाते छोड़ दीं, इहईं जे बड़का-बड़का लोग बा, ओमे केतना लोग किहाँ छठ होला ? राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, सोनिया गाँधी, जयललिता, जार्ज फर्नाडीस, कैबिनेट सेक्रेट्री, अंबानी, टाटा, बिड़ला, केकरा इहाँ छठ होला ? ओकनी किहाँ कवन चीज के कमी बा ? ई सब आपन-आपन विश्वास बा, सब मन मनला के बात ह । सँउसे दुनिया आज एतना-तरक्की कर रहल बिआ, बिना छठे कइले । बिहार में एतना छठ होला, आ उहाँ जेतना

गरीबी बा, अशिक्षा बा, बेकारी बा, लुच्चई बा, ओतना त आउर कहीं नइखे ।''

–''देखऽ । जादे फटर-फटर मत करऽ । एम.ए. का पास कर गइलू कि सब ग्यान तोहरे हो गइल । सब देश में, सब जाति में आपन-आपन धर्म-संस्कृति, रीति-रिवाज बा, कोई कुछ छोड़े के तइयार नइखे । बड़का वकील बनल बाड़ी अंग्रेजी स्कूल के, तनी कह के देख त कि क्रिसमस के छुट्टी ना होखे के चाहीं, स्कूल खोल के पढ़ाव । ओकनी के तोहार बात मान लिहेसन ? उनकर 'गुड फ्राइडे' होखे के चाहीं, 'न्यू ईयर' होखे के चाहीं । ओमें हिंदू, मुसलमान सबके छुट्टी चाहीं, उत्सव मनावे के चाहीं, बाकिर हमन के आपन परब-त्योहार छोड़ देवे के चाहीं, आपन परिवार, आपन रीति-रिवाज, आपन संस्कृति सब छोड़ देवे के चाहीं । जब तोहरे दिमाग के ई हाल बा, त लड़िका के हम का समझाईं ? हम जनतीं कि एह स्कूल में नाम लिखवला से ई दिन आई, कि हमरा अपना माई के बात काटे के पड़ी, अपना पत्नी से बेटा खातिर बकझक करे के पड़ी, आ हमार बेटा हमरा से, आ अपना परिवार से टूट के अलग हो जाई, त हम ओकर नामे ना लिखवतीं ।''

–''राउर बेटा रउआ से के छीनता ? पढ़-लिख के बड़का

आदमी बनी, त बाप के नाम दोसर बताई ? रउआ कलक्टर-कमिश्नर के बाप बन के गर्व के अनुभव ना करब ? मतारी के नाम केतना आदमी पूछेला, केतना आदमी जानेला । हम जे कुछ कर रहल बानी, कह रहल बानी, रउरे नाम-जस खातिर, रउअे खानदान के नाम ऊजागिर करे खातिर । एक दिन माई के जरूर बुरा लागी, बाकिर ऊहो ठंढा के सोचिहें, त समझिहें कि दुल्हिन ठीके कइलीं ।''

-''वाह रे दुल्हिन । खूब सास के खेयाल कर रहल बाड़ू ? बनाव बेटा के कलक्टर कमिश्नर, दादी बइठल रहिहें देखे के । अरे हमनी के रहब कि ना, एकरे कवनो ठेकान नइखे । बात अबहीं के बा, दस-बीस साल आगे का होई, के जानता ?''

-''रउआ लेखा सोचे, तब त आदमी बाल-बच्चा खातिर कुछ करबे ना करे ।''

-''अरे तोहरे बाल-बच्चा बा ? हमहूँ त केहू के बच्चा बानी ? हमार माई कभी सोचले होई कि हमार बेटा, आ ओकर बेटा उनका से एतना दूर हो जाई, कि बोलवलो पर झाँकी ना पाड़ी ? धन्न बाड़ू तू, आ धन्न बा 'हैपी स्कूल ।' एतना अनहैपी त हम कभी ना भइल रहीं ।''

-''बड़बड़ाईं जन । एकसुर्रा लेखा सोचला से काम ना

चले । रउआ माई खातिर एतना सोचतानी, त जेकरा पैदा कइनी, ओकरो खातिर त सोचीं । माई के एतना चिंता, आ बेटा के भविष्य के कवनो चिंते ना । मतारी-बाप बेटा-बेटी के चिंता ना करी, त दोसर के करी ? आजकल के जमाना में दोसरा के ना कवनो रूचि बा, ना टाइम बा । आपन परिवार के ख्याल अपने करे पड़ेला ।''

-''परिवार । परिवार परिवार का होला ? खाली मेहरारू आ बाल-बच्चा, बस । एतने ? अरे माई-बाप भी परिवारे होला । बिना माई-बाप के परिवार ? बिना जड़ के पेड़, पत्ती, छाया ? फूल-पत्ती के चिन्ता आ जड़ के कवनो फ़िकरे ना । गजब सोंच बा ।''

-''देखीं, शान्त होखीं । बहस करब, त राउर ब्लड-प्रेशर बढ़ जाई । दोसर तमाशा लाग जाई । हम चाय बनावतानी ।'' कहके निर्मला चल गइली चाय बनावे, आ प्रबोधजी आँख बन्द क के सोफा पर लेट गइले । अब उनका मुँह से कवनो आवाजे ना निकले । दस मिनट के बाद निर्मला चाय ले के अइली ।

-''उठीं चाय !''

प्रबोधजी चुप्प ।

-''अरे ठंढा नू हो जाई, सुन तानी ?''

प्रबोधजी चुप्प । आँख बंद ।

निर्मला देह धर के हिलवली । देह पसीना से तर-ब-तर । ऊ घबड़ा गइली । मातृत्व भाव दब गइल, पत्नी भाव जाग गइल । अब का करीं ? दिल्ली में त घरे बोलवला पर कवनो डॉक्टर अइबे ना करसन् । अब त अस्पताले ले जायके होई । केकरा बोलाईं । के मदद करी ? दिल्ली में कोई के फुर्सत बा ? के साथ जाई ?

कुछ ना सूझल, त निर्मला फोन से एगो टैक्सी बोलइली । कइसहूँ लाद-लूद के एमर्जेन्सी में ले गइली । उहाँ डॉक्टर देख-उख के कहलक कि "माइल्ड हार्ट-अटैक है । इन्टेन्सिव केयर में रखना होगा ।" प्रबोधजी भर्ती हो गइलन । चौबीस घंटा के बाद डॉक्टर कहलस कि "चिन्ता मत कीजिए । ठीक हो जायेंगे ।" दू दिन में निर्मला के तीनों लोक लउके लागल । बेटा भी स्कूल ना गइल । के तैयार करीत, के पहुँचाइत ? इंटेसिव केयर में त कोई के रहे ना देवे, बाहरे बइठ के रोवस ।

प्रबोधजी जब बाहर अइलन, त निर्मला के इशारा से बोला के कहलन "रवि" । ऊ रवि के बोला के उनका लगे खड़ा करा देली । बेटा के माथा पर हाथ रख के रोए लगलन । कोई कुछ ना बोलल ।

घरे लौट के निर्मला से एतने कहलन कि "माई के फोन कर द कि हमार तबियत ठीक नइखे, हम छठ में ना आ सकेब ।" निर्मला कुछ ना बोललीं । आज्ञाकारिणी पत्नी लेखा घरे फोन कर देहली । माई पूछत रह गइली कि "का भइल बा ? कइसे एतना तबियत खराब हो गइल ?" निर्मला कुछ ना बतवली, खाली एतने कहली -"सब ठीक बा ।"

माई दोसरे दिन श्रमजीवी से चल दिहली । एकरा पहिले कबहिओं अकेले दिल्ली ना गइल रही । ओ दिन पता ना कहाँ से उनका में एतना हिम्मत आ गइल, एतना फुर्ती आ गइल । दू दिन बाद खरना रहे । अपने टिकट कटवली, अपने स्टेशन से तिपहिया पकड़के प्रबोधजी के घरे पहुँच गइली । माई के देख के प्रबोधजी बिछौना पर से उठ गइलन, आ गोर पकड़ के रोवे लगलन । कोई कुछ ना बोलल । सब कुछ बोलिए के समझावल जाय, ई कवनो जरूरी थोड़े होला । बूढ़-पुरनिया लोग के भले बहुत किताब पढ़े ना आवे, कंप्यूटर चलावे ना आवे, बाकी आदमी के पढ़े आवेला असली बात ताड़ जाय के गजब बुद्धि होला । बेटा के आँसू, बहू के चुप्पी आ रवि के सकपकाहट देख के, उनका बेटा के बीमारी के पूरा अंदाज लाग गइल ।

अगिला दिन प्रबोध जी माई से खाली एतने पूछलन

"आज त खरना बा नू, का-का इंतजाम करे के बा- निर्मला के बता दीह, हम त अभी बाहर जाय लायक नइखीं ।"

माई कहली -"कुछ नइखे करे के । अब छठ ना होई । हम सुरूज भगवान से माफी मांग लेनीं । छठ बइठा देलीं । छट्ठी मइया से प्रार्थना कइलीं कि हमरा से, चाहे हमरा परिवार से कवनो गलती भइल होखे त छमा करीह । तू ठीक हो जा, बहू के सोहाग बनल रहो, रवि सूरज लेखा चमकत रहस, बस ! अब काहे खातिर छठ, केकरा खातिर छठ ? भगवान सजाय दीहें त हमरे नू दीहें, तू लोग खुश रह, जीअ, बाल-बच्चा के उन्नति होत रहो । हमरा अब केतना दिन रहे के बा ?"

माई बोलत रही, त सभे चुप रहे । बोलल खतम भइल त रोअे लगली । बस, बिना कोई के कुछ कहले, रवि आके दादी के गोदी में बइठ गइल आ लागल उनकर लोर पोंछे । एक्को मिनट ना भइल होई कि दादी ओकरा अँकवारि में भर के हँसे लगली ।

ऊपर सूरज भगवान भी हँसे लगलन ।

●

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रबोधजी कहवाँ नौकरी करस ?
   (क) सचिवालय में (ख) एगो मल्टीनेशनल कंपनी में
   (ग) एगो निजी स्कूल में (घ) कतहीं ना ।
2. प्रबोध के माई केकरा खातिर छठ करे के मनता मनले रहलीं ?
   (क) बेटा खातिर (ख) पोता खातिर
   (ग) बहू खातिर (घ) अपना खातिर ।
3. बूढ़-पुरनिया लोग का का करे आवेला ?
   (क) किताब पढ़े (ख) कम्प्यूटर चलावे
   (ग) आदमी के पढ़े (घ) कुछ ना आवे ।
4. 'केकरा खातिर छठ' कवना विधा के रचना ह ?
5. 'केकरा खातिर छठ' के कहानीकार के नाँव बताई ?

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. मोतीहारी के कन्या विद्यालय आ दिल्ली के हैपी स्कूल में निर्मला का कवन अंतर बुझात रहे ?
2. पति-पत्नी में बहस काहे हो गइल ?
3. आजकल परिवार के धारणा का हो गइल बा ?

4. आपुस में बहस का बाद प्रबोध का का हो गइल ?
5. निर्मला का फोन कइला का बाद उनकर सास का कइली ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'बूढ़-पुरनिया लोग का आदमी के पढ़े आवेला ।' एह कथन के मतलब समझा के लिखीं ।
2. एह कहानी के कथानक संक्षेप में लिखीं ।
3. एह कहानी में आज के कवना जटिल सामाजिक-पारिवारिक स्थितियन के चित्रण बा ? अपना शब्दन में लिखीं ।

भाषा

1. नीचे दिहल शब्द कवना तरह के हउवन स ?
   गोर, लमछर, सोगहग, दुलरूआ, बखलोइया, कचूमर ।
2. एह पाठ में आइल दस गो युग्म शब्द चुन के लिखीं । (जइसे- नाता-रिश्ता, खेल-कूद, बर-बेमारी ।)
3. नीचे दिहल मुहावरन के अर्थ बतलाईं-
   बखलोइया छोड़ावल, देखनिहार का धरनिहार लागल, धोलइया भइल, उल्टा-सीधा कहल, कान खोल के सुनल, बात काटल ।

परियोजना कार्य

1. बिहार के सबसे लोकप्रिय पर्व छठ मानल जाला । एह में नहा-खा से लेके अरघ देवे तक कवन-कवन बिध होला, पता करके लिखीं ।

2. 'छठी मइया' के अनेक लोकगीत गावल जाला, जइसे-

(क) केरवा जे फरेला घवद से, ओपर सुग्गा मेड़राय,
सुगवा के मरबो बनूक से, सुग्गा गिरे मुरूछाय,
सुगनी जे रोवेली वियोग से, सुगना गइले मुरूछाय ।

एही तरे के कम-से-कम पाँच गो गीत गाँव-घर के केहू परबइतिन से पूछि के लिखीं ।

अध्याय सतरह

अंतोन चेखब

[चेखव के जन्म रूस में 1860 में भइल रहे । रूसी भाषा के एह लेखक के गिनती दुनिया के महान कथाकारन में होला । उहाँ के नामी 'पुश्किन पुरस्कार' मिलल रहे । उहाँ के जिनगी संघर्ष से भरल रहल बाकिर ऐसे उहाँ के लिखल ना छुटल । कहल जाला कि चेखव के कहानी में चुप्पी बोलेला । चउवालीस बरिस के उमिर में उहाँ के मउवत 2 जुलाई 1904 के हो गइल ।

प्रस्तुत कहानी में ढ़हत सामंतवाद पर व्यंग्य कइल गइल बा । एकर अनुवाद भोजपुरी के प्रसिद्ध लेखक डॉ. प्रभुनाथ सिंह कइले बानी ।]

साल में एक बेर

राजकुमारी के तीन खिड़की वाला कमरा में आज उत्सव के माहौल बा । एकर जवानी फेर से लौट के आ गइल बा । एकरा के ठीक से झाड़ल-पोंछल गइल बा, दरवाजा खोल दिआइल बा आ खिड़की के जाली उतार दिहल बा । टटके साफ कइल खिड़की के कांच शरमात बसंत के सुरुज का साथ अठखेल कर रहल बा । बाहर दरवाजा पर एगो बूढ़-पुरनिया चौकीदार मार्क कीड़ा के चाटल वर्दी पहिन के खड़ा बा । ओकरा खुरदार ठोढ़ी पर सुरुज चमक रहल बा, जवना के साफ करे में ओकरा काँपत हाथ के पूरा सुबह लागल रहे । जरूत ले पौलिस कइल जूता आ कोट के बाँह पर टॉकल बटन भी चमकत रहे । मार्क अपना झोपड़ी से अइसहीं बाहर ना आइल रहे । आज राजकुमारी के जन्मदिन रहे । आज आवेवाला लोग खातिर ओकरा दरवाजा खोल के राखे के रहे आ पहुँचल लोग के नाम पुकारे के रहे । बइठका

में पहिले का तरह कॉफी के पिसल बीज का मँसुरी के सुप के सुगन्धि ना रहे । आज ओकर गमक अंडा के सुप के गंध के इयाद दिआवत रहे । कमरा के ठीक से साफ-सुथरा कइल गइल रहे, धूरा झरा गइल रहे आ साफ परदा लटकावल रहे । तस्वीर के ऊपर लागल कपड़ा के हटा दिहल रहे आ टुटल-फुटल फर्श पूरा पॉलिस भइल रहे । बदमाश कुत्ता जुल्फा ओकर लइकन-फइकिन के साथे, बिल्ली आ मुर्गियन के भी सांझ तक खातिर रसोई घर में बंद कर दिहल गइल रहे । एह तीन खिड़की वाली कमरा के मलकिनी झुकल कमर आ झुर्रीदार चेहरा वाला राजकुमारी एगो बड़ आराम कुर्सी पर धस के बइठल रही । कुछ समय के बीच दे के ऊ अपना सफेद मलमल के गाउन के तह के बार-बार ठीक कर लेत रहस । उनकर सिमटल-सिकुड़ल छाती पर एगो अकेला गुलाब टॉकल रहे, जवन एह बात के एहसास करावत रहे कि एह दुनिया में आज भी जवानी मौजूद बा । राजकुमारी मेहमान लोग के आगमन आ ओह लोग के बधाई लेवे के इंतजार करत रहस । एह में वेरून ट्रांव आ उनकर बेटा प्रिंस खाला खाद्जे, बुलिस्टोव को, वेउचेम्बर में सज्जन, उनकर चचेरा भाई जनरल विटकोव आ अन्य लोगन के शामिल होखे के चाहीं- कुल मिला के लगभग बीस लोग । प्रिंस खाला खाद्जे गाना गइहें आ जनरल विटकोव

उनका से गुलाब स्वीकार करे के आरजु-मिनती करिहें । बाकिर ऊ जानत बाड़ी कि उनका एह तमाम सज्जन लोग से कइसे पेश आवे के बा । उनकरा तमाम हाव-भाव, चाल ढाल में विशिष्टता, राजसी आ उम्दा पालन-पोषण के झलक आवे के चाहीं । एकरा अलावा खलुल्किन आ पेरेउल्कोव व्यापारी का भी आवे के बा । एह लोग खातिर बइठका में एगो कलम आ कागज भी रखे के रहे, ताकि ऊ लोग आपन हस्ताक्षर कर के प्रस्थान कर जाव । ओह लोग का हैसियत मालूम होखे के चाहीं । बारह बज गइल बा । राजकुमारी आपन पोशाक आ गुलाब सीधा कर रहल बाड़ी । ऊ ध्यान से कान लगा के सुन रहल बाड़ी कि कहीं कवनों घंटी त नइखे बाजत । सामने कवनो गाड़ी चल के बिना कवनो आवाज कइले आ के रुक गइल बा । पाँच मिनट बीत रहल बा । हमरा खातिर नइखे का ? राजकुमारी तहरा खातिर नइखे । पिछला साल वाली कहानी आपना आपके दोहरा रहल बा । एगो निर्मम कहानी । दू बज गइल ? पिछला साल के तरह राजकुमारी अपना सुतेवाला कमरा में चल गइली । तीखा सेंट अपना नथुना में भरत ऊ रोये लगली ।

"केहू ना आइल । केहू भी त ना ।"

बूढ़ मार्क उनकरा चारो तरफ चक्कर लगावत घूम रहल

बा । उहो कम निराश नइखे । लोग बुरा हो गइल बा । कहियो ई लोग ड्राइंग रुमें में माँछी अइसन भिनभिनात घुस आवत रहे । लेकिन आज केहू ना आइल । राजकुमारी सुसुक रहल बाड़ी– "ना प्रिंस खालाश्वाद्जे, ना जार्ज वुल्सिकी.....ई सब लोग हमरा के छोड़ देले बा । बाकिर हम एह लोग के मदद ना कइले रहतीं, त एह लोग के कवन हालत भइल रहित । अपना खुशी आ अपना कैरियर खातिर ई सब लोग हमार कर्जदार बा....खाली हमार । यदि हम ना रहितीं, त ई लोग कुछ ना बन पाइत ।"

"ई लोग कुछ ना बन सकत रहे" – मार्क दोहरा रहल बा ।

"हम ओह लोग से कृतज्ञ होखे खातिर नइखीं कहत.... हमरा एकर जरूरत नइखे । हमरा त भाव चाहीं । हे भगवान ! ई सब केतना दुखद बा । आउर–त–आउर हमार भतीजा जीन तक ना आइल । ऊ काहे ना आइल । का हम कभी कवनो ओकर बुराई कइले बानी ? हम ओकर सारा एक्का वापस लौटा देले रहीं, ओकरा बहिन के बिआह एगो भला इन्सान से करा देले रहीं । हम ओकरा पर केतना खर्च कइले रहीं, ई तू जानते बाड़े ।"

"अगर इजाजत होखे, त हम कहीं कि अपने त ओकरा माई–बाप के भी माई–बाप रहीं, महारानी !"

"बाकिर अब देख तनी, देख ई कृतज्ञता ह । हाय ! कइसन बा ई लोग ।"

पिछला साल के तरह ही राजकुमारी के दौड़ा पड़ गइल । परेशान मार्क आपन हैट पहिनलस, काफी समय तक ड्राइवर का साथ मोल-जोल कइलस आ उनका भतीजा के बोलावे खातिर चल दिहलस । सौभाग्य से जवना कमरा में जीन रहत रहे, ऊ ढेर दूर ना रहें ।.....मार्क जीन के प्रिंस-पलंग पर पसरल पवलस । ऊ रातभर के शराब-पार्टी से अभी-अभी लवटल रहे । ओकर टेढ़-टाढ़ चेहरा सुअर अइसन बैगनी हो गइल रहे । ओकरा भौंह से पूरा पसीना के बूँद छल-छलात रहे, ऊ सुते के चाहत रहे, बाकिर ई संभव ना लागत रहे । ओकर कपार भिन्नात रहे आ ओकरा पेट में उथल-पुथल मचल रहे । ओकर उदास आँख साबुन के पानी से लबा-लब भरल वाशबेसिन पर टिकल रहे । मार्क आपन आँख़ मिसत ओह गंदा कमरा में घुसत डरते-डरत ओकर पलंग तक पहुँचल ।

"ई बहुत बुरा बात बा इवान भिखांइलिच" -ऊ आपन कपार हिलावत डाँट के कहलस- "ई बहुत बुरा बात बा ।".

"कवन बुरा बात बा ?"

"आज तू अपना बुआ के जन्मदिन पर बधाई देवे ना

अइल ह । का ई बुरा बात नइखे ? का ई ठीक बात बा ?''

''तू भाँड़ में जा''

-जीन कहलस । ओकर आँख वाशबेसिन में भरल गंदा पानी पर टिकल रहे ।

''का अपने के बुझात बा कि अपने के बुआ के ई बुरा ना लागल होई ? आह, इवान भिखलाइच महोदय ! का अपने के अंदर कवनो भावना ना रहल ? अपने उनका के एतना बुरा तरह से निराश काहे कर रहल बानी ?''

''हम ना जायेब । उनका से इहे कह द.....ऊ सब रिवाज अब बहुत पुराना हो चुकल बा । हमरा पास अब फालतू घुमे-फिरे के समय नइखे ? अपने आप आवारागर्दी करीं । आउर कुछ करे के त बा ना अपने के पास । बाकिर हमरा के अपना हाल पर अकेला छोड़ द । इहाँ से चल जा । हम थोड़ा देर सुते के चाहत बानी ।''

''हम सुते के चाहत बानी.....ओह ! अपने आपन मुँह काहे मोड़त बानी ? का अपने के हमरा आँख में देखे से शर्म आवत बा ?''

''अच्छा, भाग जा । निकम्मा । बूढ़ा खूसट ।''

-मार्क जल्दी-जल्दी आपन पलक झपकावता । एगो गहिर

चुप्पी पसर जाता ।

"बाकिर अपने आ के उनका के जन्मदिन के बधाई त दे सकत बानी" -ऊ विनम्रता से कह रहल बा- "ऊ रो रहल बाड़ी, बिछावन पर चैन से लेट भी नइखी पावत.....कृपा कइल जाव । उनकर इज्जत कइल जाव, बस थोड़ा देर खातिर । आ फेर चल आइल जाई, श्रीमान् ।"

"हम ना जायेब । कवनो मतलब नइखे आ फेर हमरा लगे समय नइखे....आ फेर ओह बुढ़िया राजकुमारी के पास हम जा के का करब ?"

"चल चलीं महाराजा ! उनकरा के आदर दिहीं, मालिक ! उनकरा पर कृपा करीं । अपने के कृतघ्नता आ संवेदनहीनता से ऊ बुरा तरह से आहत बाड़ी..... कहे खातिर हम क्षमा चाहत बानी ।" -अपना कोट के अस्तर से आपन आँख पोंछ रहल बा- "उनकरा पर एतना दया कइल जाव ।"

"का उहाँ ब्राण्डी होई ?" -जीन पूछत बा ।

"होखी, मालिक !"

प्रिंस आपन आँख मलत बा ।

"आउर का सौ रुबल होई" ? -ऊ पूछत बा ।

"ऊ त ना होई । अपने अनजान नइखीं, महामहिम !

अपने जानत बानी कि हमनी के पास पइसा नइखे, जवन मिलत रहे, हमनी के सगा-संबंधी लोग तबाह कर देलस, इवान भिखाइलिच ! जब हमनी क पास पइसा रहत रहे, त सब लोग मिले आवत रहे..... बाकिर अब सब ईश्वर के इच्छा ।''

''पिछला साल हम जाये खातिर तोहरा से का लेले रहीं ? दू सौ रुबल । इहे नु ? अब तोहरा पास सौ रुबल भी नइखे । बुढ़िया के कमरा में खोज । मिल जाई । अब इहाँ से चल जा । हम थोड़ा सुते के चाहत बानी ।''

''दया कइल जाव, महामहिम ! ऊ बूढ़ बाड़ी, कमजोर बाड़ी.....उनकर जीवन अधर में धागा से लटक रहल बा । उनकरा पर कृपा कइल जाव, इवान मिखइलिच, महामहिम ।''

जीन जिद्द पर अड़ल बा । मार्क सौदेबाजी कर रहल बा । चार बजे के बाद जीन मान जात बा । आपन कोट पहिनत बा आ राजकुमारी से मिले खातिर चल पड़त बा.....

''माँ ताते'' ऊ उनकर हाथ चुमे खातिर झुकत बा आ सोफा पर बइठत-पछिला साल वाला बात शुरू कर देत बा-

''माँ ताते, हमार किसरीना नाइस क हाथे चिट्ठी भेजले बिया, ओकर पति बहुत सुंदर बा.....बा नू ।'' -फेर ओह लड़ाई के जोरदार शब्द में वर्णन करत बा, जवन ऊ एगो गावेवाली

लड़की खातिर एगो अंग्रेज से कइले रहें- हम ओह लड़की के नाम भुला रहल बानी ।''

''साँचो के ?'' -राजकुमारी आपन आँख मटका रहल बाड़ी, आपन हाथ फटकार रहल बाड़ी आ भयभीत अइसन भाव व्यक्त करत आश्चर्य से दोहरावत बाड़ी -''साँचो के ?''

''हँ, हँ । सँचहूँ में । ऊ लड़ाई-झगड़ा करत फिरेला । गावेवाली के पीछे भागत चलेला आ एही से ओकर मेहरारू पातर हो के मुरझा रहल बिया । अइसन लोग के हम समझ ना पायीं, माँ ताते !''

राजकुमारी खुश बाड़ी । ऊ जीन के नजदीक बइठत बाड़ी । ओह लोग के बातचीत देर तक चल रहल बा । चाय आ कॉफी परोसल जा रहल बा । आ जब राजकुमारी जीन के बात में खो गइल बाड़ी, हँस रहल बाड़ी, डर रहल बाड़ी या प्रभावित हो रहल बाड़ी, तब बूढ़ा मार्क एने-ओने दउड़त अपना दराज में से नोट इकट्ठा करत बा । प्रिंस जीन बहुत बड़ रियायत कर देले रहें । केवल पचास रुबल चाहीं । बाकिर एकरा खातिर एक से काम ना चली, कई गो दराज खोले के पड़ी ।

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. चेखव कवना भाषा के लेखक रहीं ?
   (क) रूसी (ख) जापानी
   (ग) अंग्रेजी (घ) हिंदी
2. 'साल में एक बेर' के अनुवाद के कइले बा ?
   (क) रमेश (ख) डॉ. प्रभुनाथ सिंह
   (ग) डॉ. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा (घ) पाण्डेय कपिल
3. चेखव के मंउवत कहिया भइल ?
   (क) 1 जनवरी 1950 (ख) 2 जुलाई 1904
   (ग) 1 दिसम्बर 1976 (घ) 10 दिसबंर 1912
4. चेखव कवना देश के रहनियार रहीं ?
5. 'साल में एक बेर' कवना विधा के रचना ह ।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. जब मार्क जीन किहाँ गइलन त ऊ का करत रहले ?
2. राजकुमारी के कइसन बातचीत नीमन लागत रहे ?
3. राजकुमारी के घरे उत्सव पर कइसन माहौल रहे ?
4. चेखव के परिचय दीं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'पठित कहानी में ढ़हत सामंतवाद के चित्र उरेहाइल बा ।' एह कथन के समीक्षा करीं ।
2. 'साल में एक बेर' कहानी के अपना भाषा में लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. अपना भाषा के कवनो कथा-कहानी के हिंदी भा अंग्रेजी में लिखीं ।

अध्याय अठारह

पाण्डेय कपिल

[सारन जिला के शीतलपुर बरेजा गाँव में जनम । काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. । राजभाषा विभाग (बिहार सरकार) में उपनिदेशक पद से सेवानिवृत । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अगुआ आ संचालक । सम्मेलन के महामंत्री के रूप में योगदान आ गाजीपुर अधिवेशन के अध्यक्ष । हिन्दी आ भोजपुरी में कईगो किताब प्रकाशित । भोजपुरी के उपन्यास 'फुलसुंघी' बहुते प्रशंसित आ पुरस्कृत । 'भोर हो गइल', 'कह ना सकली' आ 'जीभ बेचारी का कही' गीत आ गजल-संग्रह प्रकाशित । 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के बरिसन ले संपादन ।]

भोर हो गइल

खोल द दुआर, भोर हो गइल ।
किरिन उतर आइल,
आ खिड़की के फाँक से धीरे से झाँक गइल,

जइसे कुछ आँक गइल,
भीतर से बंद बा केवाड़ी त
बाहर के साँकल के पुरवाई झुन से बजा गइल,
आँगन के हरसिंगार, दुअरा के महुआ जस,
चू-चू के माटी पर अलपना सजा गइल,
ललमुनियाँ चहक उठल,
बंसी के तान थोर हो गइल ।
खोल द दुआर, भोर हो गइल ॥

रोज के उठवना जस, ऊठ, अब जाग त
किरिन-किरिन जूड़ा में खोंस ल,
झुनुक-झुनुक साँकल से पुरवाई बोलल जे,
पायल में पोस ल;
अँचरा से महुआ के गंध झरल
हरसिंगार गंध साँस-साँस में भरल,
अँगना तूँ चहक ललमुनिया अस,
दुअरा हम बंसी बजाईं
कि मन मोर हो गइल ।
खोल द दुआर, भोर हो गइल ॥

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'भोर हो गइल' के रचनाकार के ह ?
2. पाण्डेय कपिल के जन्म कहाँ भइल ?
3. 'भोर हो गइल' कवना विधा के रचना ह ?
   (क) कहानी (ख) नाटक
   (ग) कविता (घ) निबंध
4. 'भोर हो गइल' में कवना समय के वर्णन बा ?
   (क) रात (ख) दोपहर
   (ग) भिनसहार (घ) साँझ
5. कवि अँचरा से कवना चीज के गंध झरे के बात कहता ?
   (क) महुआ (ख) गुलाब
   (ग) रजनीगंधा (घ) बेली

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. काव्य कला के दृष्टि से भोर हो गइल के विश्लेषण करीं ।
2. भोर हो गइल कविता में वर्णित फूलन का बारे में लिखीं ।
3. पाण्डेय कपिल के परिचय दीं ।

4. पठित कविता में दिहल चिरईयन के बारे में लिखीं ।
5. अँगना में चहके खातिर कवि कुकरा से निहोरा करत बा ?
6. 'मन मोर हो गइल' के का मतलब बा ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'भोर हो गइल' के आधार पर सुबह के वर्णन करीं ।
2. भोजपुरी साहित्य के विकास में पाण्डेय कपिल के योगदान पर प्रकाश डालीं ।

परियोजना कार्य

1. भोरे-भोरे सूरज देख के अपना मन में आइल भाव-विचार के लिखीं ।

अध्याय उनइस

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

[सूर्यदेव पाठक 'परोग' के जनम सीवान जिला के बगौरा गाँव में 23 जुलाई, 1943 के भइल । अध्यापन कार्य । इहाँ के संस्कृत के गंभीर ज्ञान बा । इहाँ के संस्कृत, हिन्दी आ भोजपुरी में लेखन करीले । भोजपुरी में कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी, लघुकथा के अनवरत लेखन ।

प्रकाशित किताब- हीरो चरित मानस, (काव्य) अछूत (उपन्यास) जंजीर (नाटक), प्रश्न चिह्न (कहानी-संग्रह), काव्या (कविता-संग्रह) तिरमिरी (लघुकथा-संग्रह) । त्रैमासिक 'बिगुल' के बहुत दिन ले संपादन ।]

प्रेम के कलश

चन्दन के गंध
बसाईं मन में
कहीं रहीं-
घर में चाहे वन में ।
काटीं बिरवा बीख के
पनके ना,
आग कहीं
अनचितले धनके ना
भूलीं मत
अपना अभिनंदन के !

कर्म पथ पर
आगे बढ़त रहीं,

आपन इतिहास
रोज गढ़त रहीं,
उलझीं मत
व्यर्थ चरन-वन्दन में ।
काल शकुनी
फेंक रहल पासा,
दाँव पर चढ़ल
सभकर आसा,
स्वार्थ समाइल बाटे
कन-कन में ।

धीरज के डोर
कहीं छूटे ना,
प्रेम के कलश
कबही फूटे ना
दिल के संबंध
बँधे छन्दन में !

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'प्रेम के कलश' के रचनाकार के ह ?
2. कवि कवना पथ पर बढ़त रहे के कहता ?
3. सूर्यदेव पाठक पराग के जन्म कहाँ भइल ?

   (क) बक्सर (ख) सीवान

   (ग) आरा (घ) पूर्वी चम्पारण
4. 'प्रेम के कलश' कवना विधा के रचना ह ?

   (क) निबंध (ख) कविता

   (ग) उपन्यास (घ) संस्मरण
5. कविता में कवन चीज के बीरवा काटे के कहल गइल बा ?

   (क) प्रेम के (ख) आम के

   (ख) बीख के (घ) जामुन के

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. कवि चन्दन के गंध कहाँ बसावे के कहता ?
2. 'प्रेम के कलश' कविता में आशा-बिश्वास के स्वर मुखर भइल बा । एकरा के सिद्ध करीं ।

3. 'प्रेम के कलश' के भावार्थ लिखीं ।
4. काव्य कला के दृष्टि से एह कविता के समीक्षा करीं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूर्यदेव पाठक 'पराग' मूलतः मानवतावादी कवि हईं । पठित पद्यांश के आधार पर एह बात के सिद्ध करीं ।
2. भोजपुरी कविता के विकास में सूर्यदेव पाठक 'पराग' के योगदान के रेखांकित करीं ।

परियोजना कार्य

1. 'प्रेम के कलश' के नृत्य नाटिका के रूप में प्रस्तुत करीं ।